SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION
KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAHAR

COURSE NAME:- B.Ed. 2nd year SESSION - 19-21

SUBJECT :- Understanding the Self (EPC-4)

DATE :- 29.06.21

TOPIC NAME :- शिक्षक के रूप में स्वयं को तैयार करना।

Q. शिक्षक के रूप में स्वयं को तैयार करने में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की भूमिका पर प्रकाश डालें।

Ans:- शिक्षकों के वृत्तिक विकास में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की काफी अहम भूमिका है। क्योंकि इन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से नवीन सूचनाओं की प्राप्ति, शिक्षण कौशलों का विकास शिक्षकों में हो पाता है। वास्तव में, किसी भी क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने में प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि बिना प्रशिक्षण के निश्चित समय में सही तरीके से लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं हो पाती। शिक्षा के क्षेत्र में प्रत्येक दिन नए बदलाव हो रहे हैं। इन सभी परिवर्तनों से अवगत होने के लिए प्रशिक्षण की महत्ता है। प्रशिक्षण में कई लोग मिलकर सैद्धांतिक समस्याओं के समाधान का प्रयास का हल खोजने का प्रयत्न करते हैं।

प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों में योग्यता, क्षमता और प्रतिबद्धता को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। योग्यता, क्षमता और कुशलता आत्म-विश्वास को जन्म देती है जो शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता उत्पन्न कर सकता है।

शिक्षक के वृत्तिक विकास हेतु कई प्रकार के शिक्षक शिक्षा कार्य आयोजित किए जाते हैं। प्रारम्भ में इन्हें सेवापूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जाता था। परन्तु अब शिक्षा का

क्षेत्र काफी विस्तृत एवं व्यापक हो गया है।

सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण :- शिक्षक बनने से पहले शिक्षकों में आवश्यक दक्षताओं के विकास हेतु इस प्रशिक्षण का प्रावधान है। प्रारंभिक - माध्यमिक स्तरों हेतु अलग-अलग तरह के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से शिक्षकों को शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्ग कक्ष की तकनीक, शैक्षिक तकनीक, सूक्ष्म शिक्षण (micro teaching) तथा अन्य शैक्षिक कौशल सिखाई जाती है। विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन तथा परामर्श की आवश्यकता से भी अवगत कराया जाता है।

Micro-teaching द्वारा बारी-बारी से प्रत्येक कौशलों का विकास भी इस प्रशिक्षण द्वारा होता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों को इस बात की जानकारी दी जाती है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समुदाय के साथ बेहतर संबंध आवश्यक है।

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण :- सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (PTEC), प्रखण्ड संसाधन केन्द्र (BRC) एवं संकुल संसाधन केन्द्रों (CRC) में आयोजित किये जाते हैं। सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य सेवारत शिक्षकों की कार्यक्षमता, कुशलता एवं व्यवहारिकता में वृद्धि होती है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षक शिक्षा को भी शिक्षा के समान ही जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया के रूप में स्वीकृत किया गया है। वर्तमान समय में प्रारंभिक स्तर तक के शिक्षकों के लिए तीस दिवसीय सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रावधान है।

शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा नवीन विचारधाराओं का उदय हो रहा है जिसके कारण पूरी शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव आया है। इन बदलावों को समझ कर शिक्षक स्वयं में आवश्यक कुशलताएं विकसित करने की अनिवार्यता को समझ कर उसके लिए प्रयास करते हैं जिसके लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

⇒ शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका की पहचान तथा इसके चुनौतियों की समझ एवं विद्यालय संस्कृति की समझ —

आज शिक्षक की भूमिका में काफी बदलाव आया है। पहले जहाँ शिक्षक को ज्ञानदाता माना जाता था। वही इसकी भूमिका सुगमकर्ता की हो गई है। यह माना जा रहा है कि शिक्षक किसी को सीखा नहीं सकते। शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षा 'शिक्षक केन्द्रित' न हो कर के 'बाल केन्द्रित' हो गई है। बच्चों को ज्यादा से ज्यादा सोचने, समझने, बोलने एवं क्रिया करने का अवसर दिया जा रहा है। इससे शिक्षकों की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है।

आज का युग ज्ञान के विस्फोट का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा नवीन विचारधाराओं का उदय हो रहा है जिसके कारण पूरी शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव आया है। कई बार शिक्षक अपनी समस्याओं को हल नहीं कर पाते हैं। इन समस्याओं को कुछ हद तक हल करने में शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों की अहम भूमिका होती है। जिसके कारण शिक्षकों की भूमिका में भी बदलाव आ रहे हैं। शिक्षा में मल्टीमीडिया, इंटरनेट, कम्प्यूटर आदि सूचना एवं संचार तकनीकी ने भी आज अपनी पैठ बनायी है। चारों तरफ ज्ञान के स्त्रोत बिखरे पड़े हैं इन स्त्रोतों में बदलाव आया है।

एक सफल शिक्षक निम्नलिखित कार्यों को संपादित करते है –

1. एक सफल अध्यापक छात्र-प्रेमी होता है तथा विद्यार्थियों के विकास में रुचि लेकर कठनाईयों को हल करने में तत्पर रहता है। छात्रों के हित-चिन्तक अध्यापक लोकप्रिय होता है।

2. अध्यापक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए। अर्थात् वह अपने संपर्क में आने वाले छात्रों एवं व्यक्तियों का आदर एवं स्नेह प्राप्त कर सकने में सक्षम हो।

3. अध्यापक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा चरित्रवान होना चाहिए। उसमें नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता होनी चाहिए।

4. अध्यापक अध्ययनशील होना चाहिए। अर्थात् नए-नए परिवर्तनों से परिचित होते रहने की जिज्ञासा बनी रहनी चाहिए।

5. अध्यापक स्वयं अथवा अपने व्यवसाय के प्रति हीन भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए।

6. प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक शिक्षण-विधियों एवं समस्या समाधान में पटु होता है।

7. अध्यापक को हमेशा कुछ-न-कुछ प्रयोग करते रहना चाहिए तभी वह शैक्षिक कार्यक्रमों की उपयोगिता की परीक्षण करके सुधार ला सकता है।

8. अध्यापक को बदलते परिवेश के साथ समायोजन की क्षमता से युक्त होना चाहिए।

⇒ शिक्षक के वृत्तिक विकास -

शिक्षक के वृत्तिक विकास एक व्यापक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत शिक्षक अपने व्यक्तित्व पाठ्यचर्या संचालन, कक्षा प्रबंधन और विद्यालय प्रबंधन का कौशल विकास कर पाते है।

इसका आशय यह है कि यदि शिक्षण को एक व्यवसाय माना जाता है तो शिक्षक विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से पढ़ा सकता है। एक व्यवसाय, विशिष्ट अध्ययन एवं प्रशिक्षण पर आधारित शिक्षकों का वृत्तिक विकास होता है।

⇒ वृत्तिक नीतिशास्त्र :-

वृत्तिक नीतिशास्त्र को समझने के क्रम में सर्वप्रथम यह जानना जरूरी होगा कि दोनों शब्दों का पृथक-पृथक अर्थ क्या है? वृत्तिक उन अनुशासित व्यक्तियों का समूह है जो नैतिक मानकों का पालन करते है। जो किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से विशेष ज्ञान, कौशल, प्रशिक्षण और अनुसंधान में दक्ष होते है। और जो इस ज्ञान और कौशल का प्रयोग दूसरों के हित के लिए करते है।

नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र की शाखा है। इस प्रकार मनुष्यों के ऐच्छिक कर्म ही नीतिशास्त्र के दायरे में आते है। इन्हीं कर्मों के लिए नीतिशास्त्र तय करता है कि अमुक कर्म उचित है या अनुचित, शुभ है या अशुभ इत्यादि। इसलिए नीतिशास्त्र पागलों एवं बच्चों पर लागू नहीं होता।

एक शिक्षक के लिए वृत्तिक नीतिशास्त्र का संबंध नैतिकता के उन नियमों दिशा-निर्देशों से है जिनसे वह विद्यार्थियों, सहकर्मियों, समुदाय आदि से व्यवहार करते समय अपनाये। इस संबंध में U.G.C का कहना है कि जो कोई भी शिक्षण को व्यवसाय के रूप में अपनाता है, उसका दायित्व होता है कि वह पेशे के आदर्शों के अनुरूप अपने आचरण को बनाए रखें। एक शिक्षक लगातार अपने छात्रों और समाज की समीक्षा के अधीन रहता है। इसलिए प्रत्येक शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी कथनी और करनी के बीच कोई भेद न हो। इस व्यवसाय में आगे यह भी आवश्यक है कि शिक्षक शांत, धैर्यवान, मिलनसार और मैत्रीपूर्ण स्वभाव के हों।

⇒ रशवर्थ कीडर के अनुसार 'आदर्श मानव चरित्र का विज्ञान' या 'नैतिक कर्तव्य का विज्ञान' जैसे वाक्यांश आमतौर पर शामिल रहे हैं।

⇒ रिचर्ड विलियम्स पॉल और लिंडा (Linda) एल्डर के अनुसार, "नीतिशास्त्र "एक संकल्पनाओं और सिद्धान्तो का समुच्चय है, जो कौन-सा व्यवहार संवेदन समर्थ जीवों की मदद करता है या उन्हें नुकसान पहुंचाता है, ये निर्धारित करने में हमारा मार्गदर्शन करता है।"

⇒ कैम्ब्रिज डिक्शनरी आफ फिलोसिफी के अनुसार, नीतिशास्त्र शब्द का उपयोग सामान्यतः विनिमेयी रूप से 'नैतिकता' के साथ होता है। और कभी-कभी विशेष परम्परा समूह या व्यक्ति के नैतिक सिद्धान्तो के अर्थ हेतु इसका अधिक संकीर्ण उपयोग होता है।